नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ कार्म. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ३ का. शु. शु. उ. भा. १ शु. उ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि,

----

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त अपराजित और सर्वार्थसिध्दि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिध्दिक औपशमिकसम्यक्त्वके

दव्व-भावेहि उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिध्दिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि। केण कारणेण उवसमसम्मत्तं णत्थि? वुच्चदे-तत्थ ट्ठिदा देवा ण ताव उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो। भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, तत्थ उवसमसम्मत्तं पि तत्थ ट्ठिदा देवा पडिवज्जंति; को तत्थ विरोधो? इदि ण, 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं१ (सम्मत्तपढमलंभस्साणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं। लंभस्स अपढमस्स दु भजियव्वो पच्छदो होदि।। (कसायपाहुड) सम्मत्तस्स जो पढमलंभो अणादियमिच्छाइट्ठिविसओ तस्साणंतरं पच्छदो अणंतर पच्छिमावत्थाए मिच्छत्तमेव होइ। तत्थ जाव पढमट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ताव मिच्छत्तोदयं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो। लंभस्स अपढमस्स दु जो खलु अपढमो सम्मत्तपडिलंभो तस्स पच्छदो मिच्छत्तोदयो भजियव्वो होइ। जयध. अ. पृ. ९६१.)' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो। ण तत्थ ट्ठिद-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, मणुसगदी विदिरित्तण्णगदीसु वेदगसम्माइट्ठिजीवाणं

दंसणमेाहुवसमणहेदुपरिणामाभावादो। ण य वेदगसम्माइट्ठित्तं पडि मणुस्सेहिंतो विसेसाभावादो मणुस्साणं व दंसणमेाहुवसमणजोग्गपरिणामेहि तत्थ णियमेण होदव्वं, मणुस्स-संजम-उवसमसेढिसमारुहण जोगत्तणेहि भेददंसणादो। उवसमसेढिम्हि कालं काऊणुवसमसम्मत्तेण सह देवे-

---

विना दो सम्यक्त्व होते हैं।

शंका --- नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है?

समाधान --- नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तेा औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नही है, क्योंकि, वहांपर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है।

शंका --- भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा आवे, किन्तु यदि वहां रहनेवाले देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तेा इसमें क्या विरोघ है?

समाधान --- ऐसा कहना भी युक्ति-युक्त नहीं है, क्योंकि, प्रथमोपशम सम्यक्त्वके अव्यवहित पूर्व नियमसे मिथ्यात्व होता है इस कषायप्राभृतके गाथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है। यदि कहा जाय कि अनुदिश और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी बात नहीं है; क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है। यदि कहा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टिके प्रति मनुष्योंसे अनुदिशादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव मनुष्योंके समान

सुप्पण्णजीवा वि ण उवसमसम्मत्तेण सह छ पज्जत्तीओ समाणेंति, तत्थतणुवसमसम्मत्तकालादो छ-पज्जत्तिसमाणकालस्स-१ (प्रतिषु 'छ पज्जत्तीओ' इति पाठः। मु. छ पज्जत्तीणं समाणकालस्स) बहुत्तुवलंभादो। तम्हा पज्जत्तकाले ण एदेसु देवेसु उवसमसम्मत्तमत्थि त्ति२ (उवसमसम्मत्तध्दा छावलिमेत्तो दु समयमेत्तो त्ति। अवसिट्ठे आसाणो अणअण्णदरुदयदो होदि ।। अंतेामुहुत्तमध्दं

सव्वोवसमेण होदि उवसंतो। तेण परं उदओ खलु तिण्णेकदरस्स कम्मस्स।। ल. क्ष. १००, १०२) सिध्दं। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८१।

नं. १८१ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अवि.	१ संप.	६ प.	१०	४	१ देव.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. वि.	द्र. १ शु. उ. भा. १ शु. उ.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साकाअना.

अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके योग्य परिणाम नियमसे होना चाहिए सो भी कहना युक्ति-संगत नहीं है, क्योंकि संयमको धारण करनेकी तथा उपशमश्रेणीके समारोहण आदिकी योग्यता मनुष्योंके ही होनेके कारण अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें और मनुष्योंमें भेद देखा जाता है। तथा उपशमश्रेणीमें मरण करके

औपशमिक सम्यक्त्वके साथ देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव औपशमिक सम्यक्त्वके साथ छह पर्याप्तियोंको पूर्ण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि, वहाँ अपर्याप्त अवस्थामें होनेवाले औपशमिक सम्यक्त्वके कालसे छहों पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेका काल अधिक पाया जाता है, इसलिए यह बात सिध्द हुई कि अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंकें पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता हैं।

विशेषार्थ --- प्रथमेापशम सम्यक्त्वकी प्राप्ति मिथ्यात्वपूर्वक होती है ऐसा आगम वचन है और अनुदिश तथा अनुत्तर विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि होते नहीं, इसलिये वहाँ प्रथमोपशमकी प्राप्ति तो सम्भव नहीं है। अब रही व्दितीयोपशम सम्यक्त्वकी बात तो यह वेदकसम्यक्त्वसे उपशमश्रेणीके सन्मुख हुए मनुष्योंके ही सम्भव है अन्य गतियोंमें नहीं। तथा पूर्व पर्यायसे आया हुआ व्दितीयोपशमसम्यक्त्व अपर्याप्त अवस्थामें ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि, इसके कालसे छह पर्याप्तियोंके पूरा करनेका काल अधिक होता है। इस प्रकार इतने कथनसे यह निष्कर्ष निकला कि नौ अनुदिश और पांच अनुत्तरोंमें मिथ्यात्वकी प्राप्ति तो किसी

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमेा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८२। एवं देवगदी सम्मत्ता।

नं. १८२ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र.	१	३	१	२	२

अवि.	सं.अ.	अप.			दे.	पंचे.	त्रस.	वै.मि.कार्म.	पु.		मति.श्रुत.अव.	असं.	केद.विना.	२ का.शु.भा.१ शु.उ.	भा.	औप.क्षा.क्षायो.	सं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

सिध्दिगदीए सिध्द-भंगो।

एवं गइमग्गणा समत्ता।

प्रकार सम्भव नहीं। जो व्दितीयोपशम जीव वहाँ उत्पन्न होते है वे नियमसे वेदकसम्यक्त्वदृष्टि हो जाते है और वहाँ वेदकसम्यग्दृष्टियोंके व्दितीयोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्ति सम्भव नहीं, क्योंकि, इसकी प्राप्ति उपशमश्रेणिके सन्मुख हुए मनुष्योंकेही होती है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

सम्यक्त्व आलापमें आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्हीं अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये

दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या; भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं। इस प्रकार देवगतिके आलाप समाप्त हुए।

सिध्दि गतिके आलाप सिध्दोंके ओघालापके समान जानना चाहिये।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोघो। णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तिणो, अदीदपाणा, सिध्दिगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, अकाया वि अत्थि, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा वि अत्थि, णेव भवसिध्दिया णेव अभवसिध्दिया अत्थि। एदे आलावा ण वत्तव्वा, सिध्दाण-मेइंदियादिजादिणाम-कम्मस्सुदयाभावादो।

सामण्णेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, पुढवि-वणप्फई अस्सिदूण सरीरस्स छ लेस्साओ हवंति। भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८३।

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१	४	४	४	४	१	१	५	३	१	४	२	१	१	द्र.	२	१	१	२	२

मि.	बा.प.बा.अ.सू.प.स.अ.	प.४अ.	३		ति.	एके.	त्रस.विना.	औ.२का.१	नपुं.		कुम.कुश्रु.	असं.	अच.	६भा.३अशु.	भ.अ.	मि.	असं.	आहारअनाहार	साकारअनाकार

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, सिध्दिगति, अनिन्द्रिय, अकाय, संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीन्होंसे रहित स्थान, भव्यसिध्दिक और अभव्यसिध्दिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए; क्योंकि, सिध्दजीवोंके एकेन्द्रियादि जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपर्याप्त, बादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, मन:पर्याप्ति और भाषापर्याप्तिके विना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें - स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें श्वासोच्छ्वासके विना तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग,

औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन येाग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकायिक जीवोंके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छहों लेश्याएं पायी जाती हैं। भावसे कृष्ण,

----

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८४।

नं. १८४ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ बा. प. सू. प.	४ प.	४	४	१ ति.	१ एके.	५ त्रस. विना.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, दो

जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ,

---

नील और कापोत लेश्याएं; भवसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और सूक्ष्म-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचो स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेंन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-अपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचो स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८५।

नं. १८५ सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ बा. अ. सू. अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	५ त्र स. विना.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कु म. कु श्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

बादरेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८६।

नं. १८६ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा. प. बा. अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ बा. ए. जाति.	५ त्रस. विना.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और बादर-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचो स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व,

असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं,

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१८७।

नं. १८७ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा. प.	४	४	४	१ ति.	१ बा. ए. जाति.	५ त्रस. विना.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचा.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १८८ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	४	३	४	१	१	५	२	१	४	२	१	१	द्र.	२	१	१	२	२

मि .	बा . अ.	अ प .			ति .	बा . ए. ज ाति ा.	त्र स . वि ना .	अ ौ. मि . क ार्म .	ॅ ाप ुं .		कु म. कु श्रु .	अ सं .	अ च ा.	२ क ा. शु . भा . ३ अ शु .	भ. अ .	मि .	अ सं .	अ हा ा. अ ना .	स ाक ा. अ ना .

१८८ तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि,

----

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं; भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग

असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एवं बादरेइंदिय१ (णिव्वत्ति) पज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। अपज्जत्तणामकम्मोदयाणं बादरेइंदियलध्दिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे बादरेइंदियअपज्जत्तालाव-भंगो२ (प्रतिषु 'बादरेइंदियपज्जत्तालावेा भंगो' इति पाठः ।) ।

नं. १८९ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ सू.प. सू.अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ सू.ए. जाति.	५ त्रस. विना.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

१८९सुहुमेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्क-

---

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकारसे पर्याप्तनामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय (निवृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर - एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सूक्ष्मपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचो स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत, और शुक्ल लेश्याएं,

---

लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा१ (प्रतिषु 'काउसुक्कलेस्सा' इति पाठः। सव्वेसिं सुहुमाणं कावोदा. गो. जी.

४९७), भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९०।

नं. १९० सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सू. प.	४	४	४	१ ति.	१ सु. ए. जाति.	५ त्रस. विना.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. १ का. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाया, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि,

----

भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति

और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर - एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम,

---

असंजमो अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९१।

नं. १९१ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकेअपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सू. अ.	४ अप.	३	४	१ ति.	१ सू. ए. जाति.	५ त्र स वि ना.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कु म. कु श्रु.	१ अ सं.	१ अ च.	द्र. २ का. शु. भा. ३	२ भ. अ.	१ मि.	१ अ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

														अ शु .					

एवं पज्जत्त-णामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियणिव्वत्ति पज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। सुहुमेइंदियलध्दि अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एओ अपज्जत्तालावो वत्तव्वो।

वेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, छ पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा

अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय (निवृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

व्दीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय पर्याप्त और व्दीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन:पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, वायु और श्वासोच्छवास ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छवासके विना चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, व्दीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग और असत्यमृषावचनयोग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

---

इति चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९२।

नं. १९२ व्दीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ व्दी.प. व्दी.अ.	५ प. ५ अ.	६ ४	४	१ ति.	१ व्दी. जा.	१ त्रस.	४ औ. २ का. १ व. १ अन.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९३।

नं. १९३ व्दीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग.	इं.	क	यो	व	क	ज्ञा.	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ.

	.	.	.	.			ा.	.	`.	.		य.		.	ा.	.	ज्ञि	ा.	
१ मि .	१ व्दी . प.	५	६	४	१ ति .	१ व्दी . जा .	१ त्र स .	२ व. १ अ नु . अ ौ. १	१ न ाप ुं .	४	२ कुम ा. कुश्र ु.	१ अ सं .	१ अ च .	द्र. ६ भा . ३ अ शु .	२ भ ा. अ .	१ मि .	१ अस ां.	१ अ ाह ार	२ सा का रअ ना का र

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं व्दीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक व्दीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, व्दीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण, काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९४।

नं. १९४ व्दीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ व्दी. अ.	५ अ.	४	४	१ ति.	१ व्दी. जा.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचाक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

एवं वीइंदिय-पज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं वीइंदिय१ ((णिव्वत्ति)) पज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। वेइंदियाणं २ (मु. वेइंदिय-लध्दिअपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदाणं एगो।) लध्दिअपज्जत्ताणं वा अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

उन्हीं व्दीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, एक व्दीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, कायबल और आयु ये चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, व्दीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और

कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे व्दीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले व्दीन्द्रिय (निवृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। व्दीन्द्रियजाति और अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले व्दीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय पर्याप्त और त्रीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन:पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच

पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-पंचपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा१९५।

नं. १९५ त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ त्री. प. त्री.	५ प. ५ अ.	७ ५	४	१ ति.	१ त्री. जा.	१ त्रस.	४ व. १ अनु.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अ	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना	२ साका. अना

	अ.							अ ौ. २ क ा. १						शु .				.	.